''प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चेतना''

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों पर विभिन्न कोणों से शोध कार्य हो रहे हैं। ये साहित्यकार अलग–अलग विषयों या विमर्शों से जुड़े हुए हैं। जैसे दलित विमर्श, किसान विमर्श, प्रौढ़ विमर्श, नारी विमर्श और मजदूर विमर्श आदि। हिन्दी साहित्यिक इतिहास के आधुनिक काल में एक विमर्श तेजी से आगे बढ़ा है और वह है 'नारी विमर्श'। इस नारी विमर्श में भी अलग–अलग वर्गों की नारियों को केन्द्र में रखकर रचनाएँ रची गई। मध्यवर्गीय नारी विमर्श के साहित्यकारों में एक नाम प्रभा खेतान का आता है।

समाज के तीन वर्गों में एक वर्ग मध्यवर्ग है जो, समाज का सबसे विस्तृत और प्रमुख वर्ग है। मध्यवर्ग का उदय सबसे पहले पश्चिमी देशों में हुआ। ब्रिटिश काल में इसका उदय भारत में हुआ। इसके पहले समाज में केवल दो वर्ग होते थे बुर्जआ वर्ग जो शोषक वर्ग थे और सर्वहारा वर्ग जो शोषित थे। उद्योगों के विकास के साथ समाज की स्थितियाँ बदली और एक नये वर्ग का उदय हुआ जो मध्य वर्ग कहलाया आज संसार में समाज की जनसंख्या का अधिकतम हिस्सा मध्यवर्गीय लोगों का है।

नारी चेतना से आशय है नारी द्वारा अपनी क्षमताओं और अधिकारों को पहचानना, उनपर जो अत्याचार हो रहे हैं उनका विरोध कर पाना नारी मूल्यों को समझना। नारी जब सजग और सशक्त रहेगी तभी अपनी क्षमताओं और शक्तियों को पहचान पाएगी एवं उसका उपयोग अपने जीवन बेहतर बनाने में कर पाएगी। नारी को उसकी शक्ति को महसूस करा पाने के लिए जो रचनाएँ की गई है, रची जा रही हैं, यही नारी विमर्श या नारी चेतना का साहित्य है।

व्यक्तित्व –प्रभा खेतान का जन्म 2 नवम्बर 1942 को कलकत्ता (कोलकाता) के एक मारवाड़ी परिवार में हुआ था। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज कलकता से दर्शनशास्त्र में बी.ए. और कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम. ए. की डिग्री प्राप्त की। 'ज्यां पाल सार्त्र का अस्तित्ववाद' विषय से पीएच. डी. की उपाधि ली। यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अमेरिका में ब्यूटी थेरेपी कोर्स में डिप्लोमा की। भारत लौटकर 'फिगरेट' नामक हेल्थ सेन्टर की स्थापना की। बाद में उन्होंने चमड़े के समानों का निर्यात व्यापार भी किया। इसी के साथ–साथ अन्य व्यवसाय से भी जुड़ी। 20 सितम्बर 2008 को उनकी मृत्यु हुई।

प्रभा खेतान हिन्दी साहित्य के नारी विमर्श की कवयित्री उपन्यासकार, चिंतक, एक सफल व्यवसायी और समाज सेवी हैं। उनके विचारों पर दृष्टि डाला जाए तो यह कहा जा सकता है कि उनका साहित्य वैश्विक था। जो विभिन्न पक्षों को लेकर अत्यंत विस्तृत परिधि में है। उनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या', 'स्त्री पक्ष' 'अग्निसंभवा', 'छिन्नमस्ता', 'पीली आँधी' आदि उपन्यासों के साथ–साथ चिंतन परक लेख , कविताएँ अनुवाद आदि सभी कृतियाँ एक नारी के जीवन की परिस्थितियाँ और उनसे नारी को कठिनाईयों से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने का प्रमाण देती है। प्रभा खेतान के साहित्य के मूल में नारी चेतना ही है।

प्रभा खेतान की साहित्यिक साधना समकालीन हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय है। वह नारी विमर्श के प्रमुख लेखिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। उन्होने अपने भोगे हुए यथार्थ को साहित्य का रूप देकर दुनिया के सामने नारी के वास्तविक स्वरूप को रखा है। 'आओ पेपे घर चलें' की एलिजा

कहती है –''वह आंसू बहाती है, बहाती रहती हैं पर चेहरे पर स्वीकृति का मुखौटा लगायें रहती हैं पर, स्वीकारती नहीं। हाँ, अस्वीकार भी नहीं कर पाती।''[1] नारी की मानसिक दुर्द्रशा का सचित्र वर्णन उनके साहित्य में मिलता है 'अन्या से अन्या' में प्रभा द्वारा आइलिन से प्रश्न ''तब क्या तुम्हारे देश में भी औरतें त्रिशंकु होकर जी लेती है?'' आइलिन कहती है ''कहाँ नहीं जीतीं वे ? दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओ, जहाँ औरत के आँसू नहीं गिरे?''[2] नारी को पुरूष का साथ या परिवार बचाने के लिए कितने मानसिक संघर्ष करने पड़ते हैं। 'आओं पेपे घर चलें' की कैथी का कथन–''झेलना तो पड़ता है जिदंगी की सारी कला और सृजन तो इसमें हैं कि तुम खुद पर बड़ी से बड़ी त्रासदी में हँस सकते हो या नहीं?''[3] इस प्रकार नारी को पुरूष के शर्तों के अनुसार चलना पड़ता हैं यह नारी के लिए बड़ी बिडंबना है। इस प्रकार प्रभाजी के साहित्य में हमें नारी की वास्तविक दशा के दर्शन होते हैं। उनकी साहित्यिक कृतियों का मुख्य केन्द्र बिंदु नारी और उसका मानसिक संघर्ष है।

वह समाज सेवी थीं, अनेक संस्थाओं के माध्यम से समाज के लोगों की सेवा करती रहीं। 'प्रभा खेतान फाउण्डेशन' की संस्थापिका एवं अध्यक्षा थीं। वह एक सफल व्यवसायी थी। 'कलकत्ता चेम्बर ऑफ कॉमर्स' की पहली महिला अध्यक्षा थीं। साथ ही हिन्दी को सेविका के रूप में केंन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सदस्या थीं।

संदर्भ सूची :

1. प्रभा खेतान– आओ पेपे घर चलें – पृ. सं 72, वाणी प्रकाशन
2. प्रभा खेतान– अन्या से अनन्या , पृ.सं– 130, वाणी प्रकाशन
3. प्रभा खेतान– आओ पेपे घर चलें, पृ.सं 125, वाणी प्रकाशन

कृतित्व –

प्रमुख उपन्यास :

1. ‘आओ पेपे घर चलें’ अमेरिकी पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। अमेरिकी महिलाओं की संघर्ष और जीवन की कथा है।
2. ‘स्त्री पक्ष’ मध्यवर्गीय परिवारों के नारी की कथा । उम्र के हर पड़ाव में उसके जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ और उनसे लड़कर आगे बढ़ती नारी का चित्रण है।
3. ‘अग्नि संभवा’ चीन की महिला किसान के जीवन और संघर्ष की कहानी है।
4. ‘अपने अपने चेहरे’ अपनी जमीन को तलाशती स्त्री की कहानी है। नारी को अपने अस्तित्व के लिए हर जगह संघर्ष करना पड़ता है।
5. ’एड्स’ दाम्पत्य जीवन में भटकाव और उससे उपजी समस्याओं की कहानी है।
6. ’छिन्नमस्ता’ बचपन से उपेक्षित नारी अपनापन ढूंढती है अंत में वह अपनापन स्वयं के अंदर ही पाती है आत्मनिर्भर होकर जिम्मेदारियाँ भी पूरा कर पाती है।
7. ’तालाबंदी’ मार्क्सवाद पर आधारित उपन्यास जो व्यवसायिक जगत के यथार्थ रूप को उजागर करती है।
8. ’पीली आँधी’ मारवाड़ी समाज के अनछुए पहलुओं को खोलता है। इस कहानी में परिवार की मर्यादा लांघ कर घर से बाहर चली गई बहु को पुनः वापस घर में प्रवेश दिलाया जाता है।

9. 'अन्या से अनन्या 'प्रभा खेतान जी को सबसे चर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास है। यह लेखिका की जिंदगी में हुए सभी छोटे–बड़े यथार्थ का दर्शन कराती है।

अनुवाद में 'स्त्री उपेक्षिता', 'सांकलों में कैद क्षितिज' आदि कृतियाँ प्रमुख है चिंतन परक लेखों में 'उपनिवेश में स्त्री', 'भूमंडलीकरण के स्त्री प्रश्न', 'सार्त्र का अस्तित्व वाद', 'सार्त्र शब्दों का मसीहा', 'अल्बेयर कामू वह पहला आदमी' आदि है।

कविता संग्रह में 'अपरिचित उजाले', 'सीढ़ियाँ चढ़ती ही मैं, 'एक और आकाश की खोज में', 'कृष्णा धर्मा मैं', 'हुस्नोबानों और अन्य कविताएँ' एवं 'आहिल्या' आदि है।

प्रभा खेतान के साहस, क्षमता तथा सहित्यिक अवदान को कई पुरस्कारों, सम्मानों से भी नवाजा गया। जिनमें से कुछ इस प्रकार है–

महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन–पुरस्कार केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा

बिहारी पुरस्कार–के. के. बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा

टॉप पर्सनाल्टी एवार्ड (उद्योग के लिए)–लायंस क्लब द्वारा

उद्योग विशारद–उद्योग टेक्नोलॉजी फाउण्डेशन द्वारा

प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार–भारत निर्माण संस्था द्वारा

शोध की प्रेरणा

प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' पढ़ने के बाद लगा कि यह समाज के बहुसंख्यक महिलाओं की कथा है। आत्मकथा में वर्णित कुछ घटनाएँ ज्यादातर महिलाओं के जीवन में घटती है। प्रभा खेतान का बचपन उपेक्षित था। एक सम्पन्न परिवार से ताल्लुक रखने पर भी उनकी परेशानियाँ कम नहीं थी। उन्होंने अपने मेहनत और लगन से समाज में अपनी जगह एवं पहचान एक सुप्रसिद्ध लेखिका, एक सफल व्यवसायी तथा समाज सेवी के रूप में बनाया।

'अन्या से अनन्या' पढ़ने के बाद प्रभा खेतान के प्रति मन में रूचि जागृत हुई और मैंने प्रभा खेतान को गंभीरता से समझना—परखना चाहा, फलतः मुझमें मध्यवर्गीय नारी जीवन की गहराई में जाने की इच्छा प्रबल हुई।

इस संदर्भ में मैंने अपनी शोध– निर्देशिका से सलाह मशविरा किया और उन्होनें भी मुझे उक्त विषय पर कार्य करने को प्रेरित किया। अतः मैंने शोध—निर्देशिका की प्रेरणा एवं निर्देशन में प्रभा खेतान के रचना साहित्य पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

शोध का उद्देश्य, महत्व तथा प्रभा खेतान पर किये गये पूर्व के शोध–कार्य –

हर किसी कार्य को करने का कोई न कोई उद्देश्य होता है। प्रस्तुत विषय का उद्देश्य है प्रभा खेतान की साहित्यिक कार्यों का सही मूल्यांकन करते हुए मध्यवर्गीय नारी चेतना के विभिन्न पहलुओं को सामने लाना। इससे प्रभा खेतान एवं मध्यवर्गीय नारी के जीवन मूल्यों को समझने – जानने में उक्त विषय पर रूचि रखने वाले अध्ययन कर्त्ताओं तथा शोधार्थियों को विशेष सहायता संभव होगा।

अब तक प्रभा खेतान पर विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों ने जो शोध कार्य किये हैं, उपलब्ध जानकारी अनुसार कुछ इस प्रकार है–

1. प्रभा खेतान के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–नेहा गौर (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, 2020)
2. डॉ प्रभा खेतान के साहित्य में आधुनिकता स्वरूप विश्लेषण–काटे वंदना तुकाराम (सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, 2018)
3. प्रभा खेतान के उपन्यासों में जीवन मूल्य – शहजादा नजीर (कश्मीर विश्वविद्यालय, 2018)
4. प्रभा खेतान के लेखन में स्त्री संवेदना – मीना आशा (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2018)
5. भूमंडलीकरण और प्रभा खेतान का उपन्यास – स्वाती वर्मा (विश्वभारती विश्वविद्यालय कलकत्ता, 2018)

उपर्युक्त शोध प्रबंधों में प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम, आधुनिकता विश्लेषण, जीवन मूल्य, स़्त्री संवेदना, भूमंडलीकरण आदि

का अध्ययन किया गया है। अतः मेरी दृष्टि में प्रस्तुत विषय' प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चेतना' पूर्णतः नवीन शोध–कार्य होगा। जो प्रभा खेतान के उपन्यासों की मध्यवर्गीय नारियों के विषय में अध्ययन करने में उपयोगी साबित होगी।

इस शोध में मेरा उद्‌देश्य उनके संपूर्ण व्यक्तित्व , साहित्यिक एवं सामाजिक सेवा कार्यों पर दृष्टि डालना है। विशेष रूप से मध्यवर्गीय नारी की दशा–दुर्दशा को रेखांकित करते हुए। मेरा प्रयास यह भी होगा कि वृहत स्तर पर इनके साहित्यिक सेवा कार्यों को शिक्षा जगत में ला सकूँ।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध शीर्षक – ''प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चेतना'' के शोध–कार्य को करने के लिए प्रभाजी के द्वारा रचित, अनुदित और संपादित उपन्यासों, कहानी, कविता, चिंतन परक लेख और पत्र– पत्रिकाओं का उपयोग करूँगी । इसी के साथ उनपर लिखी गई किताबों का सहारा लूँगी । अन्य उपलब्ध स्त्रोतों से भी मैं प्रभा खेतान एवं मध्यवर्गीय नारी जीवन के संबंध में जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश करूँगी ।

शोध प्रारूप

अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तावित शोध विषय पर निम्न प्रारूप के अनुसार कार्य करने की योजना है–

प्रस्तावना :

प्रथम अध्याय :

प्रभा खेतान उपन्यास साहित्य और मध्यवर्ग

क. प्रभा खेतान का व्यक्तित्व एवं लेखन संक्षिप्त परिचय

ख. भारतीय मध्यवर्ग

(1) भारतीय मध्यवर्ग का स्वरूप

(2) ऐतिहासिक विकास

(3) भारतीय मध्यवर्ग एवं आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य – मूलतः नारी कथा साहित्य के संबंध में

द्वितीय अध्याय :

प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय नारी : विविध रूप

क. प्रभा खेतान के साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय नारी : सामान्य परिचय

ख. प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय नारी का स्वरूप :

(1) प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय शहरी नारी का स्वरूप

(2) प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय ग्रामीण नारी का स्वरूप

(3) प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय शिक्षित नौकरी पेशा नारी का स्वरूप

(4) प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित घरेलू नारी का स्वरूप

तृतीय अध्याय :

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी और उसका विविध पारिवारिक संबंध :

क. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी का दाम्पत्य संबंध

ख. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी का सास–ससुर के साथ संबंध

ग. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी का अपने संतान के साथ संबंध

घ. प्रभा खेतान के उपन्यासों में अन्य पारिवारिक संबंध

चतुर्थ अध्याय :

क. प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्ग का अन्य वर्गीय संबंध

ख. मध्यवर्गीय समस्याएँ एवं विसंगतियाँ

पंचम अध्याय :

प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी मूल्य –

क. पारिवारिक मूल्य

ख. सामाजिक मूल्य

उपसंहार

ग्रंथ सूची

- आधार ग्रंथ सूची
- सहायक ग्रंथ सूची

नोट : आवश्यकता होने पर विषय सूची में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची :

1. प्रभा खेतान– आओ पेपे घर चलें , सरस्वती विहार नई दिल्ली, 1993
2. प्रभा खेतान – अग्निसंभवा , हंस पत्रिका नई दिल्ली, 1992
3. प्रभा खेतान – अपनें अपने चेहरे , हिन्दी बुक सेंटर नई दिल्ली, 2010
4. प्रभा खेतान – अन्या से अनन्या , वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2019
5. प्रभा खेतान –एड्स , पूजा पब्लिकेशन कलकत्ता, 1993
6. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता , राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2017
7. प्रभा खेतान– तालाबंदी, सरस्वती विहार नई दिल्ली, 1993
8. प्रभा खेतान – पीली आँधी, लोक भारती प्रकाशन प्रयागराज, 2019
9. प्रभा खेतान – स्त्री पक्ष , जनसत्ता पत्रिका , नई दिल्ली, 1994

सहायक ग्रंथ सूची :

1. पवन वर्मा – भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, राजकमल प्रकाशन, 2013
2. प्रमोद कुमार –1782 फ्रांस की क्रांति , नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 2019
3. डॉ देव्यानी महिड़ा – नारी चेतना और प्रभा खेतान के उपन्यास, विकास प्रकाशन कानपुर, 2019
4. डॉ उषा कीर्ति राणावत– प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार , वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2015
5. आकांक्षा भट्ट – प्रभा खेतान की स्त्री कानून के कटधरे में, सन्मति पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2016

6. प्रेम रंजन भारती – प्रभा खेतान के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, आयुष्मान पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली, 2019
7. डॉ उमा शुक्ला – भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज, 2011
8. रेखा कुर्रे – समकालीन परिदृश्य और प्रभा खेतान के उपन्यास, हिन्दी बुक सेंन्टर नई दिल्ली, 2019
9. अनामिका– स्त्री विमर्श का लोक पक्ष, वाणाी प्रकाशन नई दिल्ली, 2012
10. अनामिका– स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2012
11. रमणिका गुप्ता– स्त्री मुक्ति संधर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2012
12. नमिता सिंह– स्त्री प्रश्न, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2017

- **इंटरनेट स्रोत**

डॉ रेणु सिन्हा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
निर्मला कॉलेज डोरंडा, राँची
दूरभाष – 9430763472

दिनांक...........................

शोध निर्देशिका का सहमति पत्र

मैं सेवती सुरीन को राँची विश्वविद्यालय की पीएच. डी. उपाधि हेतु ''प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चेतना'' विषय पर निर्देशन के लिए सहमति प्रदान करती हूँ।

हस्ताक्षर

''प्रभा खेतान के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चेतना''

राँची विश्वविद्यालय राँची की पीएच. डी. हिन्दी उपाधि के निमित्त

प्रस्तावित शोध –प्रबंध की रूपरेखा

मानविकी संकाय

हिन्दी विभाग

2023

शोध निर्देशिका

डॉ रेणु सिन्हा

असिस्टेंट प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग

निर्मला कॉलेज डोरंडा राँची

शोधार्थी

सेवती सुरीन

नेट, जेआरएफ

जून 2022